मणिपुरी नृत्य

मणिपुरी नृत्य का वेश-भूषा बड़ा ही मनमोहक है। जैसा ललित्य, नृत्य में है वैसा ही पोशाक भी। रास नृत्य में राधा का जड़ीदार लंहगा बिल्कुल गोल, एक फ्रेम पर गढ़ा रहता है। उसके ऊपर से जालीदार कपड़े का फ्रिल जैसा होता है। जरी लगा ब्लाउज होता है, सिर पर जूड़ा और जूड़ा के पास मुकुट रहता है, जिस पर से एक रूपहला या सुनहला जाली का दुपट्टा होता है।

नर्त्तकी जेवर में, गले में, कान में तथा हाथ में चूड़ी सुनहले रंग का पहनती हैं। पैर में पाजेब रहता है। इस नृत्य में घुंघरू नहीं पहना जाता है। ललाट पर बहुत सुन्दर लाल एवं चमकीली बिन्दी लगाकर नर्त्तकी अत्यन्त सुन्दर दिखती हैं।

नर्त्तक कृष्ण की भूमिका में रहते हैं और उनका पोषाक होता है पीला रेशमी धोती, ऊपर से मखमली छोटा सा आधे बाँह का मिरजई जैसा पहनते हैं। जरीदार चौकोर टुकड़ा धोती पर दोनों बगल झूलता रहता है। सिर पर मुकुट और उसमें मोर का पंख लगा रहता है, नर्त्तक पूर्ण आभूषण में रहते हैं पांव में पायल जैसा पहनते हैं घुंघरू नर्त्तक भी नहीं पहनते क्योंकि पांव जमीन पर मारा नहीं जाता बल्कि बहुत ही धीरे पद संचालन अर्थात कोमलता से किया जाता है। इस प्रकार मणिपुरी नृत्य में रास का यही पोषाक होता है।

परन्तु पुंग चोलम पोषाक में सादी धोती, बदन पर सफेद और लाल अंगवस्त्र सिर पर पगड़ी पहनते हैं और हाथ में बाला पाँव में मोटा-सा कड़ा जैसे पहनते हैं।

मंजिरा चोलम–इस नृत्य में नर्त्तकी धारीदार लुंगी लाल या कत्थई ब्लाउज और सादा दुपट्टा ओढ़ती है। कान में हल्का जेवर, हाथों में चूड़ी, गले में हल्का-सा हार रहता है। इस प्रकार से मणिपुरी नृत्य का पोषाक गौरवपूर्ण होता है।

ओड़िसी नृत्य (वेश-भूषा)

ओड़िसी उड़िसा का शास्त्रीय नृत्य है, इस नृत्य के पोषाक से राज्य की झलक मिलती है। ओड़िसी में नर्त्तकी प्रारंभ में माहरी और देवदासी के समय में सफेद साड़ी और पुष्प के जेवर से सुसज्जित रहती थी। कालान्तर में वेश-भूषा में बदलाव आया जैसे आज के समय में संबलपुरी साड़ी (संबलपुरी उड़िसा में एक स्थान है जहाँ रेशमी साड़िया हाथ से बुनकर बनाते हैं)। पहले साड़ी को धोती जैसा पहनाया जाता था परन्तु आज बिल्कुल सिला-सिलाया खूबसूरत वस्त्र आता है, चार भाग जुड़ जाते हैं। आगे में पंखे के समान रहता है जो बैठने पर खुल जाता है, अब जेवर पहना जाता है, जेवर में उड़ीसा का चाँदी का जेवर बहुत प्रसिद्ध जिसे (फिलिगिरी) काम भी कहते हैं।

इसमें अत्यंत खूबसुरत जालीदार चाँदी के जेवर रहते हैं। नर्त्तकी यही जेवर पहनती है। कान में पत्ता बना हुआ जिससे पूरा कान ढका जाता है और बड़ा-सा झुमका लटका रहता है, गले में चिक फिर एक लम्बा बड़ा-सा लॉकेट वाला हार, हाथ में जालीदार चौड़ा बड़ा बाजुबन्द लाल धागे से गुथा हुआ रहता है। कमर में पान जैसा चाँदी का छोटा-छोटा ऊपर वाली पंक्ति में करीब 50 पान आकार का गुथा रहता है। उसके नीचे 2 रुपया के सिक्का बराबर वह भी 50 सिक्का गुथा रहता इसी क्रम को दोहराया जाता है अर्थात् 4 पंक्ति में यह चौड़ा-सा भारी सा कमरधनी होता है जिसे यहाँ की बोली में कमर पेटी कहते हैं। पाँव में चौड़ा पायल और उसके उसके ऊपर एक-एक पाँव में 100 घुंघरू पहने जाते हैं। चेहरे की सजावट खूब की जाती है आँख में सुंदर तरीके से काजल भौंह पर पेन्सिल चलाई जाती है। बिन्दी लाल और उसके चारों तरफ सफेद से बिन्दी बनायी जाती है। जूड़े में शोला (पानी में उगता है सफेद

रंग का जिसके मुकुट फूल आदि बनते हैं) से बना चौड़ा गजरा जो जूड़े में लगाया जाता है। बीच में सिर से सटे खोंस दिया जाता है। मांग पर टीका और टायरा पहनती है और अब जाकर पूरी तैयारी होती है। केवल पाँव में आलता बचता है जिसे अन्त में लगाते हैं। आलता हाथ पैर दोनों में लगाया जाता है और नर्त्तकी पूर्ण रूप से सज-धजकर मंच पर जाने हेतु तैयार होती है।

प्रश्न

1. मणिपुरी नृत्य की वेश-भूषा क्या होती है?
2. ओड़िसी नृत्य में नर्त्तकी कैसा जेबर पहनती हैं?
3. ओड़िसी नृत्य का पोषाक कैसा होता है?
4. 'रास लीला' का पोषाक कैसा होता है?
5. पुंग चोलम का पोषाक कैसा होता है?
6. कथक नृत्य का मुगलकालीन वेश-भूषा क्या था?
7. कथक में पुरुषों द्वारा किस प्रकार का पहनावा प्रचलित हैं?
8. 'पेशवाज' किस प्रकार की वेश-भूषा है?
9. 'भरतनाट्यम' की वेश-भूषा प्रचलित करने का श्रेय किसे प्राप्त है?
10. 'राकोड़ी' किसे कहते हैं?
11. 'भरतनाट्यम' नृत्य की वेश-भूषा का वर्णन करें।

❑

8 शास्त्रीय नृत्य इस प्रकार से हैं-
(1) कथक-उत्तर भारत (2) भरतनाट्यम तमिलनाडु (दक्षिण भारत) (3) मणिपुरी-मणिपुर (4) ओड़िसी-ओडिशा (5) कथ कली-केरल (6) मोहिनीअट्टम-केरल (7) कुचिपुड़ी-आन्ध्रप्रदेश (8) सैत्रिय-असम (नवीन शास्त्रीय नृत्य)

6

पाश्चात्य नृत्य शैलियों का अध्ययन

पाश्चात्य देशों में प्रचलित नृत्य शैली को पाश्चात्य नृत्य शैली कहा जाता है । पाश्चात्य नृत्यकला का जन्म लगभग पन्द्रहवीं शताब्दी में इटली में तो हुआ, किन्तु इसे कलारूप देने का श्रेय फ्रांस को है । इसलिए फ्रांस को आधुनिक पाश्चात्य नृत्य शैली की जननी कहा जाता है । पाश्चात्य शैली के नृत्य के लिए यूनान, इटली, फ्रांस, नार्वे, स्वीडेन आदि देशों के नाम उल्लेखनीय हैं जहाँ पाश्चात्य शैली का विकास हुआ । भारत के समान ही स्पेन और फ्रांस के गुहा-चित्रों में कुछ आकृतियाँ नृत्य करती दिखाई पड़ती हैं जिससे यह अनुमान लगाया जाता है, कि पूर्व ऐतिहासिक युग में, यूरोपीय आदि मानव, घटनाओं को जादुई-तरीके से प्रभावित करने के लिए नृत्य करता था । इसी प्रकार मिस्र, यूनान, रोम और उसके निकटवर्ती क्षेत्रों के ऐसे लिखित उल्लेख व चित्र प्राप्त हुए हैं जिनमें उन देशों में प्राचीनकाल में प्रचलित नृत्यों का विवरण है । पश्चिम के लोगों का कहना है कि नृत्य सिर्फ मनोरंजन एवं विश्राम देने के लिए है ।

पन्द्रहवीं और सोलहवीं शताब्दी के पुनर्जागरण के काल के बाद ही पाश्चात्य नृत्य मुख्यत: दो धाराओं में विकसित हुआ जिन्हें सामान्य रूप से बॉलरूम डान्स और थियेट्रिकल या बैले डान्स कहते हैं । इसके अलावा पाश्चात्य देशों में अन्य प्रकार के नृत्य भी प्रचलित हैं । इनमें से कुछ नए और कुछ पुराने भी हैं । रॉक एण्ड रौल, तारनताल साल तारेली, ग्रल्लेश, ड्रोकनी, रैकी, स्ट्रीपरीज चा चा चा और ट्विस्ट आदि ।

बॉलरूम डॉन्स–बॉलरूम डॉन्स प्राचीन दरबारी नृत्य से ही निकला है । यह वो सामाजिक या लोकप्रिय नृत्य है जो स्त्री- पुरुष युगल द्वारा पूर्व निर्धारित संगीत की लय पर निजी समारोह या सार्वजनिक सभागारों में सदैव ही नाचे जाते हैं । इसमें स्त्री का बायाँ हाथ पुरुष के दाएँ कन्धे पर और पुरुष का दायाँ हाथ स्त्री की कमर पर टिका हुआ रहता है । स्त्री का दायाँ और पुरुष का बायाँ हाथ आगे की ओर मिलकर झुका हुआ रहता है । व्यक्तिगत समारोह या सार्वजनिक उत्सवों पर बिना बॉलरूम डान्स के कार्यक्रम सम्पन्न नहीं होता है । नृत्य करते समय शरीर का निचला भाग ही चलता है । अर्थात् ये नृत्य मुख्यत: पाद-चारियों से ही सम्पन्न होते हैं । इन पादचारियों के अंतर्राष्ट्रीय रूप से स्वीकृत नियम क्रम हैं । बॉलरूम नृत्यों में 1820 से 1910 ई० तक जो लोकप्रिय नृत्य थे, उनके नाम है –वाल्ट्ज (Walti) क्वाड्रीले (Quadrille) और पोल्का (Polka)। प्रथम विश्वयुद्ध के ठीक पहले निग्रो नृत्य और दक्षिणी अमेरिका के नृत्य यूरोप पहुँचे और टैंगों (Tango) तथा टुम्बा (Tumba) नृत्य आकर्षण केन्द्र बने । ये लैटिन अमेरिकन नृत्य में सर्वश्रेष्ठ थे । जो अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त नृत्य थे । यूरोप की युवा पीढ़ी ने इस उत्तेजक नृत्य को तेजी से अपना लिया ।

उन्नीसवीं शताब्दी में कुछ और प्रकार के नृत्यों का प्रचलन हुआ । ये थे वन स्टेप, टू स्टेप, टर्की ट्राट, फॉक्स ट्राट, और क्लिक स्टेप । इसके बाद रॉक एण्ड रोल, ट्विस्ट, डिस्को शेक इत्यादि प्रचलित हुए । इसके बाद ब्रेक डॉन्स का दौर चला जो केवल लयात्मक व्यायाम मात्र सिद्ध हुआ । ब्रेक डान्स में त्वरित गति के कारण शरीर के जोड़ो को हानि होने लगा । अतः अमेरीका जैसे-देशों ने उस पर प्रतिबन्ध लगा दिया । भारत में एरोबिक्स नामक नृत्य शैली का प्रवेश हुआ जिसमें व्यायाम पूर्ण नृत्य गतियों को स्थान दिया गया । ये सभी नृत्य थोड़े-थोड़े समय तक मुख्य नृत्य के रूप में प्रचलित रहे और चले-गए तथा युवा पीढ़ी के समक्ष नई खोज का संकेत कर गए । इन सभी के अतिरिक्त भी कतिपय अन्य नृत्य है जो बॉलरूम नृत्य की शृंखला में आते हैं । ये सभी नृत्य अपने आत्मिक आनन्द के लिए किए जाते हैं । बॉलरूम नृत्य पाश्चात्य जनजीवन का अपरिहार्य अंग है ।

बैले–बैले पाश्चात्य देशों में विकसित एक अत्यन्त समृद्ध रंगमंचीय कला है, जिसमें संगीत, मंच सज्जा और विशिष्ट वेश-भूषा के साथ अत्यधिक शैलीबद्ध नृत्य की योजना की जाती है । बैले-में किसी वर्णनात्मक विषय वस्तु को ताल लय के साथ नृत्य के माध्यम से प्रस्तुत की जाती है । बैले शब्द की व्युत्पत्ति इटालियन भाषा के बेलरे शब्द से हुई है जिसका अर्थ है-नृत्य करना । बैले में एक विशेष प्रकार की दृश्यात्मक नृत्य होती है । बैले का अर्थ है-विविध नृत्यों को जोड़कर शृंखलाबद्ध होकर समूह द्वारा प्रस्तुत किए जाने वाला नृत्य। 15वीं 16वीं शताब्दी में इटालियन बैले की परम्परा चली जिसमें किसी कथानक के आधार पर मूक अभिनय, गीत, संगीत वेश-भूषा के साथ नृत्य प्रस्तुत करते थे । कलात्मक अभिव्यक्ति की दृष्टि से बैले एक समृद्धशाली परम्परा लेकर विकसित हुआ । बैले से अलग शैली करने के लिए अनेक पाश्चात्य नृत्यों को तरह-तरह के विशेषता लगाकर प्रचलित किया गया जैसे-एक्सक्लूसिव डॉन्स, ओरिएन्टल नृत्य, फ्री डॉन्स, ग्रीसीयन डॉन्स, नेचुरल डॉन्स इत्यादि। बैले के अतिरिक्त जो नृत्य प्रचलित हुआ उस पर अमेरिका का प्रभाव पड़ा अतः वैसी सभी शैलियों को अमेरिकन नृत्य कहा जाने लगा । बैले का इतिहास हमें बताता है कि इसे रुचि परिवर्तन के अनेक दौरों से गुजरना पड़ा है जैसे कि बैले शुद्ध नृत्य है या यह तकनीकी वस्तु संग्रह की चमत्कारपूर्ण आंगिक अभिव्यक्ति है या यह नाट्य नर्त्तन है अथवा शैलीबद्ध अंग विन्यास द्वारा किसी कथानक का प्रस्तुतिकरण है । अपने सिद्धांतों से परे बैले एक प्रयोग प्रधान कला है जो बहुत से उच्चकोटि के तथा वैविध्यतापूर्ण बुद्धि वाले-आचार्यों द्वारा कठोरता से निर्धारित कार्य सम्पादन तालिका से अद्भुत है ।अतः बैले पाश्चात्य देशों की सबसे समृद्ध, आकर्षक और अनुशासित रंगमंचीय कला है। यह जितनी पारम्परिक है उतनी ही प्रयोगवादी भी । ऐसे अत्याधुनिक प्रयोगों में फ्रांस और अमेरिका अग्रेजी है । बैले में परम्परागत साधना के साथ-साथ नए-नए प्रयोगों की सम्भावनाएँ काफी है ।

ओपेरा–अंग्रेजी शब्द ओपेरा, इटालियन मुहावरे ओपेराइन म्यूजिक का संक्षिप्त शब्द है जिसका अर्थ है-सांगीतिक कृति । यह उस मंचीय कला का नामकरण है जिसमेंसंगीत से युक्त कोई नाट्यलेख रहता है जिसे

सामान्यत: वाद्यों के संगत के साथ गाया जाता है । ओपेरा की परम्परा पाश्चात्य देशों में अत्यन्त प्राचीन काल से चली आ रही है । ओपेरा के पाँच अंग होते हैं–प्रस्तावना, कथा, संवाद अभिनय, गीत तथा नर्त्तन । सम्पूर्ण कथा गीतों के माध्यम से प्रस्तुत की जाती है जिसकी दो शैलियाँ हैं– मूक अभिनयात्मक और संवादात्मक । ओपेरा की दूसरी शैली में केवल पद्य संवाद मात्र रहते हैं और संवाद के अतिरिक्त कथा भाग को गीत, अभिनय या नृत्यात्मक गति द्वारा प्रस्तुत किया जाता है । कला में परिवर्त्तन के साथ-साथ ओपेरा में भी परिवर्त्तन हुए । ओपेरा की मूल विशेषता यह है कि धार्मिक सामाजिक कथाओं के कारण इसे समाज के प्रत्येक वर्ग का सम्मान मिला है, और ओपेरा ने भी संसार का भरपूर मनोरंजन किया है ।

अत: पाश्चात्य नृत्य न ही प्राचीन है और न ही इसका कोई प्रामाणिक ग्रन्थ है । पाश्चात्य नृत्यों में उद्दाम भावनाएँ एवं चपलताएँ अधिक रहती है । पाश्चात्य संस्कृति भौतिकवादी है। अतएव पाश्चात्य नृत्यों का ध्येय मुख्य रूप से जनमन का मनोरंजन करना है ।

प्रश्न

1. पाश्चात्य नृत्य शैली से आप क्या समझते है ?
2. पाश्चात्य नृत्य शैली का वर्गीकरण करें ।
3. बॉलरूम डॉन्स का वर्णन करें ।
4. 1820 ई० से 1910 ई० तक के लोकप्रिय नृत्यों के नाम लिखें ।
5. 19वीं शताब्दी के प्रचलित नृत्यों के क्या नाम थे ?
6. एरोबिक्स नृत्य को समझाएँ ।
7. बैले नृत्य को सविस्तार समझाएँ ।
8. ओपेरा किस मुहावरा का संक्षिप्त शब्द है ?
9. ओपेरा के कितने अंग हैं ? लिखें ।
10. ओपेरा नृत्य शैली का सविस्तार वर्णन करें ।

❑

विविध

(ज्ञान विस्तार हेतु)

1. कथक नृत्य के घरानों का वर्णन

कथक नृत्य का विकास प्राचीनकाल से चली आ रही कृष्ण लीला के अंतर्गत रास–नृत्य तथा ब्रजक्षेत्र में प्रचलित कुछ लोकनृत्य के आधार पर हुआ है । मुगलकाल में मुसलमान और हिन्दू राजाओं के दरबार में जब कथक नृत्य और उसके कलाकारों को आश्रय मिला तो उनमें उनकी संस्कृति और रुचि के अनुसार परिवर्तन होते चले गए । इसी अवधि में दरबारी नृत्यकार अलग–अलग स्थानों में अपनी–अपनी शैलियों का विस्तार करने में जुट गए और यहीं से घरानों की उत्पत्ति हुई । कथक नृत्य के शैलियों का तीन स्थानों में प्रचार–प्रसार हुआ जिसे तीन प्रमुख घराना के नाम से जाना जाता है । ये तीन मुख्य घराना है लखनऊ घराना, जयपुर घराना, बनारस घराना ।

लखनऊ घराना–लखनऊ घराने की नींव श्री ईश्वरी प्रसादजी ने रखी । श्री ईश्वरी प्रसाद इलाहाबाद जिले के हंडिया तहसील के निवासी थे । एक किंवदन्ती के अनुसार उन्हें स्वप्न के कथक नृत्य का पुनरुद्धार करने एवं इसे भागवत बनाने के लिए भगवान श्रीकृष्ण ने आदेश दिया । ताकि भगवान की सारी लीलाओं को नृत्य के माध्यम से दिखाया जा सके । ईश्वरी प्रसाद जी उसी क्षण से इस कार्य में जुट गए और उन्होंने 80 वर्ष की आयु में इस कार्य को पूरा कर लिया । उन्होंने अपने तीनों पुत्र अड़गु जी, खड़गुजी और तलगुजी को नृत्य में पारंगत किया तथा उन्होंने कथक नृत्य का पुनरुद्धार करने की आज्ञा दी । तत्पश्चात् उनके पुत्र प्रकाश जी, दयालु जी और हरिलाल जी लखनऊ चले गए और यहीं से लखनऊ घराने का प्रचार–प्रसार एवं शैली का विकास हुआ । प्रकाश जी के भी तीन पुत्र हुए–दुर्गा प्रसाद, ठाकुर प्रसाद, और भानु प्रसाद । दुर्गा प्रसाद के तीन पुत्र हुए–बिन्दादीन, कालिका प्रसाद और भैरव प्रसाद । कालिका बिन्दादीन के नाम से चर्चित जोड़ी बनाकर इन्होंने नृत्य का काफी प्रचार प्रसार किया । बिन्दादीन ने हजारों ठुमरियों की रचना करके नृत्य में भाव पक्ष को सबल बनाया । उन्हीं के द्वारा आगे के वंशज भी नृत्य की शिक्षा लेते रहे, जिससे लखनऊ घराना पूरी तरह स्थापित हो गया । कालिका प्रसाद के तीन पुत्र हुए–अच्छन महाराज, शंभु महाराज और लच्छु महाराज । अच्छन महाराज के पुत्र बिरजू महाराज की ख्याति आजकल देश और विदेशों में फैली हुई है । बिरजू महाराज वर्तमान में लखनऊ घराने का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं । इस घराने से संबंधित प्रमुख कलाकार दमयन्ती जोशी, रौशन कुमारी, शास्वती सेन आदि हैं । लास्य अंग की बहुलता इस घराने की विशेषता है । गत भाव एवं रास प्रदर्शन के लिए यह घराना प्रसिद्ध है । तालबद्ध भावों को जब नर्तक प्रस्तुत करता है तो निर्जीव कल्पना भी मानो सजीव हो जाती है । इस घराने में परण प्रिमलू संक्षिप्त में तथा लास्य प्रधान नृत्य अधिक नाचे जाते हैं । नृत्य के बोल भी कवित्त, छन्द तथा पखावज के बोल पर आश्रित होते हैं ।

जयपुर घराना–जयपुर घराने के संस्थापक भानूजी को माना जाता है । आज से लगभग डेढ़ सौ

साल पहले भानूजी ने जयपुर घराने की नींव डाली । वे भगवान शिव के भक्त थे–और इन्हें एक सन्त द्वारा शिव तांडव की शिक्षा प्राप्त हुई थी । इन्होंने अपने पुत्रों को यह नृत्य सिखाया और फिर परम्परागत नृत्य को आगे बढ़ाया । इन्होंने तांडव नृत्य की शिक्षा अपने पुत्र लालजी और कानूजी को दिया । कानूजी के पश्चात् इनके दो पुत्र गीधाजी और शेखाजी इस घराने के प्रसिद्ध नर्त्तक हुए । गीधाजी के पुत्र हरीप्रसाद और हनुमान प्रसाद नृत्यकला में प्रवीण थे । इस प्रकार पुश्त दर पुश्त इस कला को प्रश्रय भी मिला और इसका विकास भी हुआ । जयपुर घराने का उदय भानू जी के द्वारा हुआ था जो तांडव नृत्य के उत्कृष्ठ कलाकार थे । अतः इस घराने में तांडव नृत्य का बहुत ही प्रभाव और महत्त्व है । इस घराने के प्रसिद्ध कलाकारों में श्यामलाल, चुनीलाल, दुर्गा प्रसाद, गोवर्धन जी, जयलाल सुन्दर प्रसाद जी हैं जिन्होंने भारत के कोने–कोने में इस घराने का प्रचार–प्रसार किया । जयलाल जी और सुन्दरलालजी की जोड़ी ने इस घराने का सर्वाधिक प्रचार किया । इस घराने से संबंधित अन्य कलाकार कार्त्तिकराम, पुविया बहन राधेलाल रोहिणी–भाटे, फिरतूदास आदि हैं । तबला तथा पखावज के परण, चक्करदार बोल इत्यादि इस घराने में विशेष रूप से नाचे जाते हैं । विकट लयकारी तथा कठिन बोलों को प्रस्तुत करना इस घराने की अपनी विशेषता है । पैरों की तैयारी पर विशेष ध्यान दिया जाता है । चक्कर, तत्कार और लय बाँट का आश्चर्यजनक प्रदर्शन इस घराने का प्रभावशाली अंग है । बोल परण, पक्षी परण तथा एक पैर के चक्कर का प्रदर्शन इस घराने की विशेषता है । पैरों के संतुलन के बीच एक घुँघरू का आवाज लय के साथ निकालना इस घराने की अद्भुत प्रदर्शन है ।

बनारस घराना– यह घराना जयपुर घराने की ही एक शाखा है । राजस्थान के जानकी प्रसाद जब बनारस चले गए तो उनकी तथा उनके दो अन्य भाई दुल्हाराम तथा गणेशीलाल, ने वहाँ एक अलग घराना स्थापित किया और यही घराना आज बनारस घराना के नाम से विख्यात है । इसे जानकी प्रसाद का घराना भी कहा जाता है । इस घराने के प्रसिद्ध नर्त्तक जानकी प्रसाद, शिवलाल, सितारा देवी, गोपीकृष्ण, कृष्णकुमार कुन्दनलाल, दुर्गाप्रसाद इत्यादि है । इस घराने की विशेषता यह है कि यहाँ नृत्य के बोलों में तबला या पखावज के बोल नहीं लिए जाते, बल्कि शुद्ध नृत्य के बोल ही प्रयोग होते हैं । अंग – भाव की शुद्धता एवं मुद्रा पर अधिक ध्यान दिया जाता है । गति मुद्रा तथा अंग–भाव एवं बोलों की मौलिकता के कारण यह घराना जयपुर तथा लखनऊ घराने से पृथक दृष्टि गोचर होता है । कथक नृत्य में उपयुक्त तीनों घराना अपनी अपनी विशेषता एवं ख्यातिप्राप्त संस्थापकों के कारण प्रसिद्ध एवं लोकप्रिय है । सभी भारतीय कथक नृत्यकार इसी तीनों घराने के संबंधित नृत्य करके इसका प्रचार–प्रसार कर रहे हैं । कहीं पैरों की तैयारी और चक्कर की विशेषता है तो कहीं लास्य, शृंगार एवं भाव की प्रधानता है तो कहीं अंग भावों की शुद्धता पर नृत्य केन्द्रित है । अतः तीनों घरानों के प्रतिनिधि कलाकार वर्तमान में अपने–अपने घरानों के प्रचार–प्रसार में संलग्न हैं ।

प्रश्न

1. कथक नृत्य का विकास कैसे हुआ ?
2. घराना से आप क्या समझते है ?
3. लखनऊ घराने के गुणी नर्तकों के नाम बताएँ ।
4. जयपुर और बनारस घराने के संस्थापक कौन थे ?
5. लखनऊ एवं जयपुर घरानों की तुलना कीजिए ।

❑

माहरी - अर्थात् महत नारी या महान नारी। ये ईश्वर के समक्ष नृत्य करती थी। मंदिर के गर्भ गृह में भी इन्हें जाने की अनुमति थी।

2. भारतीय संगीत की लिपि(Notation)

भारतीय शास्त्रीय संगीत की एक बेहद महत्वपूर्ण पद्धति (Notation) है। काललिपि और स्वर लिपि पद्धति मुख्यत: उत्तर भारतीय और दक्षिण भारतीय काललिपि स्वरलिपि पद्धतियाँ पूरे भारत में प्रचलित हैं। यह जानना बड़ा रोचक है कि गीतों की धुन और नृत्य के बोल तथा वाद्ययंत्रों पर बजाये जानेवाले ठेके और गत एकदम स्वतंत्र लिपि में लिखे जाते हैं। जिन्हें दुनिया भर के संगीतकार देखकर गा-बजा सकते हैं।

जिस प्रकार हमारा देश अनेकं भाषा-भूषाओं के कारण अनूठा है वैसा ही अनूठापन हमारे संगीत नृत्य में भी है। उत्तर भारतीय तालपद्धति में तालों के लिए चिह्न अलग हैं, तालों की बनावट अलग है ठीक वैसे ही दक्षिण भारतीय ताल व स्वर पद्धति में बनावट का फर्क है, स्वर लिखने, लयकारी करने का ढंग भी अलग है। इसीलिए उत्तर भारतीय तालों में रूपक नाम के ताल में 7 मात्रा (Notation) होती है। पर दक्षिणी तालों में रूपक नाम के ताल में 6 मात्रा होती है पर उनके बनावट में अंतर होता है। उसी प्रकार एक ही स्वर समूह वाले राग उत्तरी स्वरलिपि व दक्षिणी स्वरलिपि में अलग-अलग नाम से जाने जाते हैं।

❑

प्रसिद्ध परवावज वादक के नाम- गुरु रामाशीष पाठक, पृथ्वीराज कुमार, श्री अरुण पाठक, पन्नालाल उपाध्याय, श्री भगवान बेहेरा, संजय उपाध्याय, सिद्धीशंकर।

3. नृत्याचार्यों के चित्र

बिरजू महाराज

नीलम चौधरी

शोभना नारायण

सितारा देवी

केलु चरण महापात्रा

केलुचरण महापात्रा

दुर्गालाल

यामिनी कृष्णमूर्ति

सोनल मान सिंह

रमादास (बिहार)

मधुकर आनन्द

4. नृत्य में प्रयोग होनेवाले वाद्ययंत्रों के नाम सचित्र

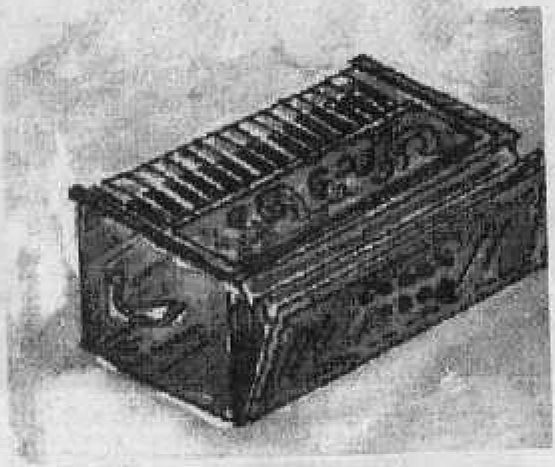

हारमोनियम

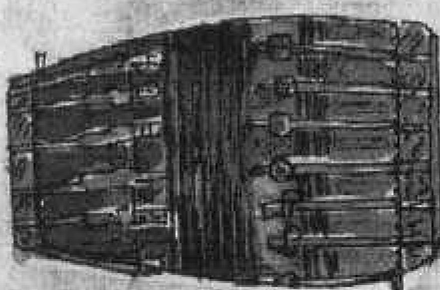

नाल

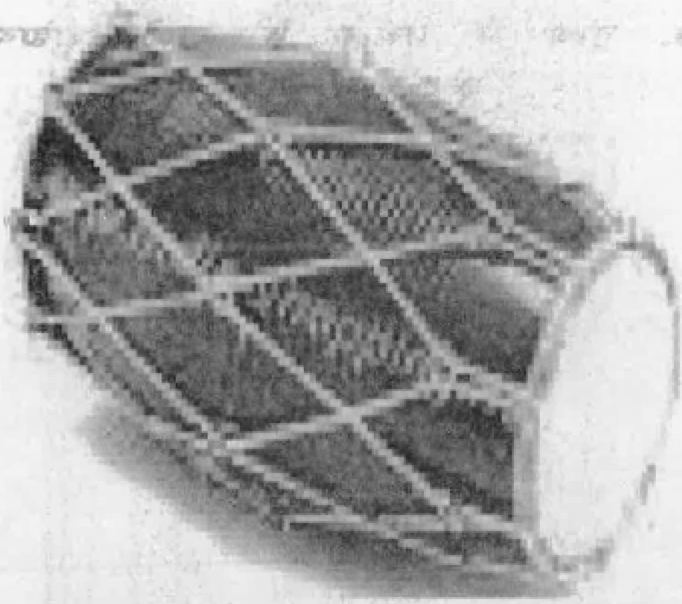

ढोलक

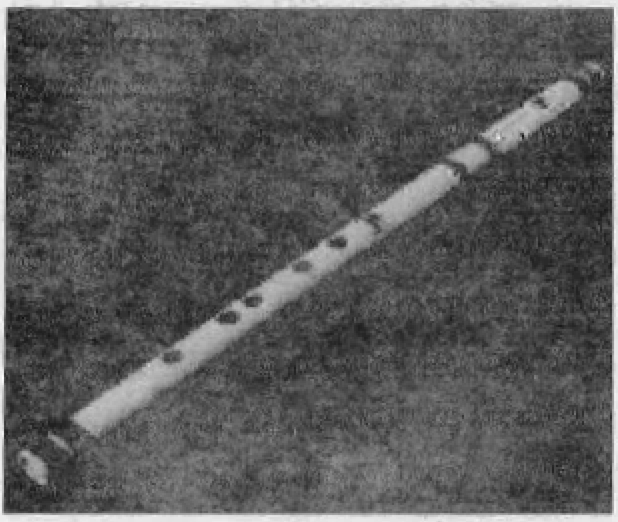

बांसुरी

तबला

थंभरी

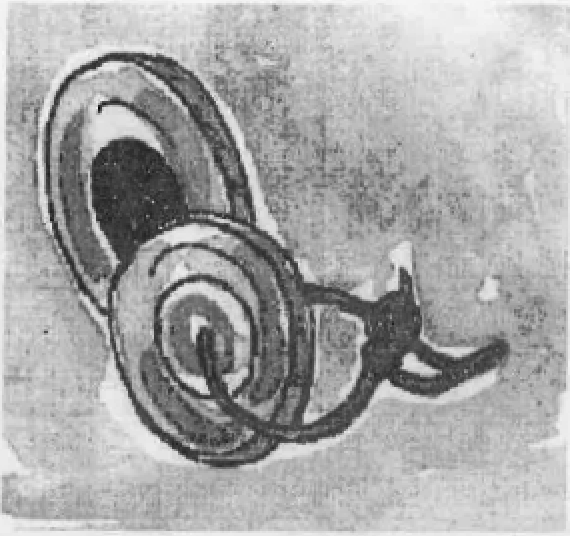

मंजिरा

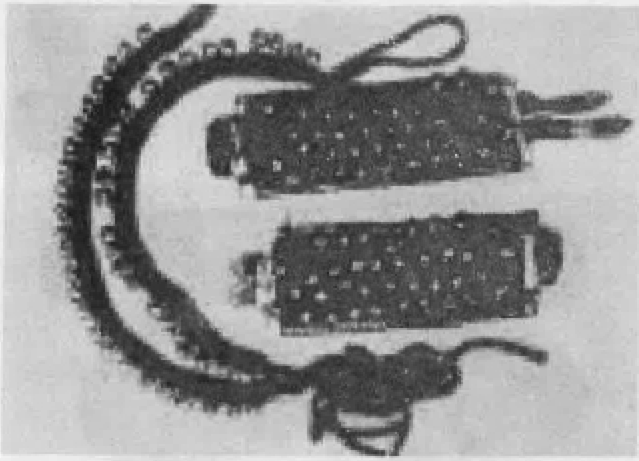

घुंघरु

खंजरी

सितार